# फुलवाड़ी

## ( भाग-3 )

## तेसर कक्षाक मैथिली भाषाक पाठ्य-पुस्तक

एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार पटना द्वारा विकसित बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित।

## दिशा-बोध-सह-पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राजेश भूषण**, राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **हसन वारिस**, निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., पटना
- **श्री मुखदेव सिंह**, क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक, तिरहुत प्रमण्डल, मुजफ्फरपुर
- **श्री रामेश्वर पाण्डेय**, कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **श्री बसंत कुमार**, शैक्षिक निबंधक, बी. एस. टी. पी. सी., पटना
- **डॉ. सैयद अब्दुल मोइन**, विभागाध्यक्ष, एस. सी. ई. आर. टी., पटना
- **डॉ. श्वेता सांडिल्य**, शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**, प्राचार्य, टी. आई. एच. एस., पटना

**लेखक सदस्य**

- **डॉ० अरुण कुमार झा**, व्याख्याता,
  राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, पटना सिटी, पटना
- **डॉ० वीणाधर झा**, व्याख्याता,
  पटना कॉलेजियट स्कूल, दरियापुर, पटना
- **श्री कृष्ण देव झा**, स० शि०,
  उ० म० विद्यालय, सहोड़ा (हायाघाट) दरभंगा

**समीक्षक**

- **डॉ. इन्द्रकान्त झा**, पूर्व यूनिवर्सिटी प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
  मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना-5
- **डॉ. इन्दिरा झा**, अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
  रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, लोहियानगर, पटना-20

**समन्वयक**

- **डॉ. अर्चना**, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना

**अभार : यूनिसेफ बिहार**

# आमुख

बच्चाकेँ बजबाक इच्छा होइत छैक। बुझबाक बेगरता रहैत छैक। जे देखब से कहब। जे सुनब से बाजब। बाजब आ सुनब माने संवाद करब। गप्प करब। बच्चाक गप्प बेकार नहि होइत अछि। ओहिमे कौतुहल आ खुशीक भाव रहैत अछि। मोनक बात कहबाक हड़बड़ी। नव बातकेँ जनबाक खुशी। जे देखब तकरा तुरत्ते जनबाक उत्कंठा बच्चाक गुण छैक। जे जानल रहत से दोसरा धरि पहुँचा देब ओकर स्वभाव छैक।

बाल्यावस्थाक एहि गुणकेँ विकासक बाट धरायब एहि पोथीक अभीष्ट अछि। ई पोथी बच्चाक जिज्ञासाकेँ शान्त करैत अछि। मुदा, ओहिसँ पैघ बात ई अछि जे एहिमे जिज्ञासा उत्पन्न करबाक लेल सेहो सामग्री अछि। बच्चाक प्रश्नक उत्तर देब आवश्यक अछि। संगहि बच्चाक मोनमे प्रश्न उत्पन्न करब कम आवश्यक नहि अछि। तेसर कक्षाक लेल तैयार कयल गेल एहि पाठ्य-पुस्तक मे उक्त दुनू बिन्दु पर ध्यान राखल गेल अछि।

तेँ एहि पोथीक पाठ-चयन तथा ओहि आधार पर पूछल गेल प्रश्नसँ छात्रक मोनमे नव-नव बातकेँ जनबाक इच्छा जगैक तकर प्रयास कयल गेल अछि। ओकर बुझबाक आ सोचबाक शक्तिक विकास होइक ताहि दृष्टिकोणसँ पोथीक निर्माण भेल अछि। विषय वस्तुक विविधताक यैह कारण अछि। एहि पोथीमे देशक लोक, एहिठामक खेल-कूद, मेला-ठेला, चिड़ै-चुनमुनी आदिक सम्बन्धमे बहुत-किछु कहल गेल अछि। तहिना नीरोग आ स्वस्थ कोना रहब, कोन-कोन काज कयलासँ आदर्श व्यक्ति बनब आदि प्रसंगमे सेहो सोझ-सरल भाषामे रास्ता देखाओल गेल अछि। अन्तमे मिथिलाक्षर सिखबाक लेल फराकसँ एकटा पाठ देल गेल अछि। एहिसँ मैथिलीक अपन लिपिमे लिखबा-पढ़बाक अवगति छात्रकेँ हेतनि।

पाठ्य-पुस्तकक निर्माण राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् पटनाक योजना आ मार्गदर्शनक अन्तर्गत भेल अछि। विश्वास अछि जे एहिसँ मैथिली भाषा-भाषी बच्चाकेँ ज्ञान प्राप्त करबाक अवसर भेटतैक आ आगाँ बढ़बाक रास्ता खुजतैक।

**निदेशक**

# विषयानुक्रम


| | | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|
| 1. | देश | 5–8 |
| 2. | आरुणि | 9–12 |
| 3. | आयल बादरि कारी-कारी | 13–16 |
| 4. | कबड्डी | 17–22 |
| 5. | नीरोग रहबाक उपाय | 23–27 |
| 6. | नीति-पद | 28–29 |
| 7. | एकटा चिनमा खेलियै रौ भैया | 30–35 |
| 8. | दादी | 36–38 |
| 9. | हरिहर क्षेत्र मेला | 39–42 |
| 10. | बानर | 43–45 |
| 11. | नीक काज | 46–49 |
| 12. | तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर लिपिक ज्ञान | 50–54 |

अध्याय-1

# देश

देश हमर अछि भारतवर्ष।
सभ सँ बढ़ल चढ़ल उत्कर्ष॥

जनिक माथ पर उज्जर केश
बनल हिमालय निर्मल वेश।
हिलि मिलि गंगा यमुना नीर
उमड़ल, जहिना मन आवेश॥

वृद्ध पितामह भारतवर्ष।
जनिक कोर चढ़ि पाबी हर्ष॥

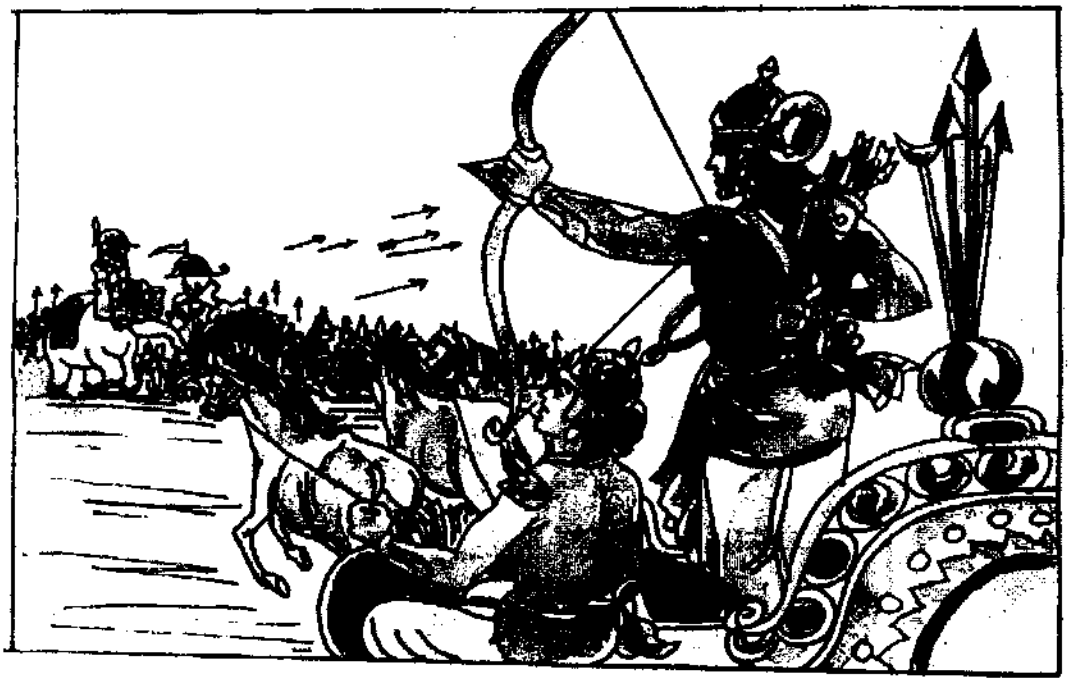

कुरुक्षेत्र केर कथा सुनाए
आखर रामायणक बुझाए

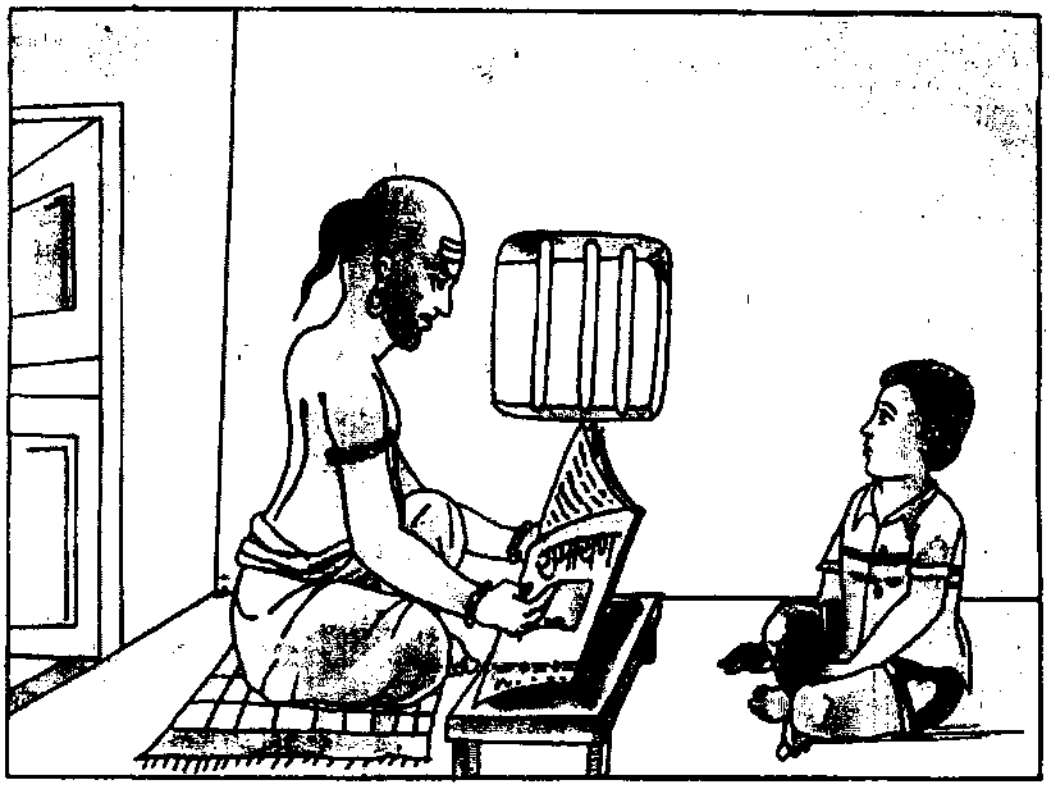

बोधथि गुन-गुन गीता गाबि
कानि उठी हम जखन चेहाए

नानी बुढ़िआ भारतवर्ष।
कथा सुनाबथु लाखो वर्ष॥

सुरेन्द्र झा "सुमन"

## प्रश्न ओ अभ्यास

### ☐ पाठ मे

1. प्रश्नक उत्तर दिअ
   (क) हमरालोकनि कोन देशमे रहैत छी ?
   (ख) "उज्जर केशक" की अर्थ ?
   (ग) एहि कवितामे पितामह किनका कहल गेल अछि ?
   (घ) गंगा आ यमुना की थिक ?
2. (क) नीचा देल गेल शब्दक अर्थ लिखू।
   केश, निर्मल, आवेश,
   नीर, उत्कर्ष,
3. (क) एहि कविताकेँ कंठस्थ करू आ वर्गमे सुनाउ।
   (ख) एहि कविताक अतिरिक्त देशसँ संबंधित आन कविता सभक संग्रह करू।
   (ग) रामायण मे ककर कथा अछि ?
   (घ) कुरुक्षेत्र किएक प्रसिद्ध अछि ?

## ☐ भाषा अध्ययन

"स", "श", एवं "व" क उच्चरण।

(क) दाँतक पाछू जीह एवं दाँतक संयोगसँ 'स' केर उच्चारण होइत छैक।

(ख) तालु एवं जीहक संयोगसँ 'श' केर उच्चारण होइत छैक।

(ग) मुर्द्धा एवं जीहक संयोगसँ 'ष' केर उच्चारण होइछ।

(घ) पाठमे आयल कठिन शब्दक अर्थ

4. एहन शब्द सभक संग्रह करू जाहिमे स, श एवं ष वर्णक प्रयोग भेल हो।

5. उपरोक्त संगृहीत शब्द सभक उच्चारणक अभ्यास करू।

## ☐ शब्दार्थ

उत्कर्ष-उत्थान, निर्मल-स्वच्छ, वेश-पोशाक,
नीर-जल, आवेश-स्नेह

■

अध्याय-2

# आरुणि

प्राचीन समयमे भारतमे आइ काल्हि जेकाँ पढ़बाक लिखबाक व्यवस्था नहि छलैक। तहिया विद्यार्थी गुरुक आश्रममे जाय रहय। ओतहि राति दिन गुरुक सेवा करैत पढ़य लिखय। गुरुक आज्ञा मानब विद्यार्थीक पहिल कर्तव्य रहैक। विद्यार्थी सब कोन प्रकारेँ गुरुक आज्ञाकारी रहय तकर अनेक कथा छैक। आरुणिक कथा ओहि सबमे बड़ प्रसिद्ध अछि।

आरुणि गुरुक आश्रममे रहि पढ़ैत रहय। आनो कय गोट बालक ओहि आश्रममे ओकरहि जेकाँ रहय। गुरु जे अढ़बथिन्ह से सब करैत जाय।

गुरुकेँ खेत रहनि मुदा ओहि वर्ष वर्षा बिनु खेत रोपल नहि भेल रहनि। एक दिन भोरहिसँ वर्षा होअय लगलैक। गुरु वर्षासँ प्रसन्न तँ भेलाह मुदा मन पड़लनि जे खेतक आरि काटल अछि। जँ बान्हि नहि देबैक तँ पानि बहि जायत। तखन रोपनी नहि भय सकत। ई बिचारि ओ आरुणिकेँ कहल–

हओ आरुणि, जाह, खेतक आरि बान्हि आबह जे वर्षाक पानि खेतसँ बहि नहि जाय।

आरुणि बिदा भेल। खेत जाय ढेप चेपसँ आरि बान्हय लागल मुदा खेतक पानि ततेक वेगसँ बहैत रहैक जे आरि बान्हल नहि होइक, ढेप–चेप भसिआय जाइक।

आरुणि बड़ चिन्तामे पड़ल। की करत, की नहि। अन्तमे ओ अपनहि जेमहर दय पानि बहैत रहैक ताहि ठाम पड़ि रहल। अपना देहसँ पानि बहब रोकि ओतहि पड़ल रहल।

जखन बुनछेक भेल तखन गुरु आओर चटिआ केँ संग लय खेत गेलाह। खेत पानिसँ भरि गेल रहनि। बड़ प्रसन्न भेलाह। मुदा आरुणिकेँ तकथिन्ह तँ भेटनि नहि। गुरुकेँ बड़ चिन्ता भेलय जे आरुणि कतय गेल। चिकरि–चिकरि गुरु आरुणिकेँ सोर करय लगलथिन्ह।

आरुणि उत्तर देल–गुरु, हम आरि पर पानि रोकने पड़ल छी। उठब कोना।

आरुणिक उत्तर सूनि गुरु ओकरा लग गेलाह। ओतय गुरु देखल जे आरुणि आरि बनल जाड़सँ थर-थर कँपैत पड़ल अछि। गुरु ओकरा उठाय हृदयसँ लगा लेल। आश्रम लय जाय गुरु आगि पजारि आरुणिक सेवा शुश्रूषा करय लगलनि। प्रसन्न भय गुरु आरुणिकेँ आशीर्वाद देल।

"आरुणि, तोँ हमर आज्ञाक एहि तरहेँ पालन कयलह। तोँ बड़ विद्वान होएबह। तोँ तेहन नामबर होएबह जे तोहर नाम कहिओ लोक बिसरत नहि।"

**मै. शि. सा.**

## प्रश्न ओ अभ्यास

1. एहि प्रश्न सभक उत्तर दिअ
   - (क) गुरु आरुणिकेँ की आज्ञा देलनि ?
   - (ख) आरुणि गुरुक आज्ञाक पालन कोना कयलक ?
   - (ग) पहिने भारतमे विद्यार्थी कोना पढ़य ?
   - (घ) आरुणिकेँ गुरु की आशीर्वाद देलथिन ?
2. सही वाक्य पर सही (√) एवं गलत वाक्य पर गलत (×) केर निशान लगाउ।
   - (क) गुरुक आज्ञा मानब विद्यार्थीक कर्त्तव्य नहि रहै। ☐
   - (ख) वर्षा भेलासँ गुरु प्रसन्न भेलाह। ☐
   - (ग) आरुणि खेत पर जाय सुस्ताय लागल। ☐
   - (घ) आरुणि खेतक आरिक बीच पड़ि रहल। ☐
   - (ङ) आरुणिक कार्यसँ गुरु बड़ प्रसन्न भेलाह। ☐

3. निम्नलिखित शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू।

अढ़ायब, आरि बान्हब, रोपनी, थर-थर काँपब, हृदयसँ लगायब।

4. निम्नलिखित शब्दक अर्थ कहू–

व्यवस्था, आश्रम, आज्ञाकारी, कर्त्तव्य, वेग, बुनछेक, चटिया, सेवा, आशीर्वाद।

5. (क) छात्र ओ शिक्षकसँ सम्बन्धित कोनो आन रोचक कथा जँ अहाँकेँ स्मरण अछि तँ वर्गमे सुनाउ।

(ख) विद्यालयमे आरुणिक कथा पर आधारित संगी सभक संग अभिनयक आयोजन करू।

6. शब्दार्थ–

आश्रम–ऋषि मुनिक आवासीय घर

आज्ञा–आदेश

अढ़बथिन्ह–काजक आदेश देथिन्ह

आरि–मेड़

रोपनी–धान रोपब,

बुनछेक–बुन्दाबुन्दी बन्द होयब

चिकरि-चिकरि–जोर-जोर सँ बाजि कय

सेवा-सुश्रूषा–सेवा-टहल

नामबर–प्रसिद्ध

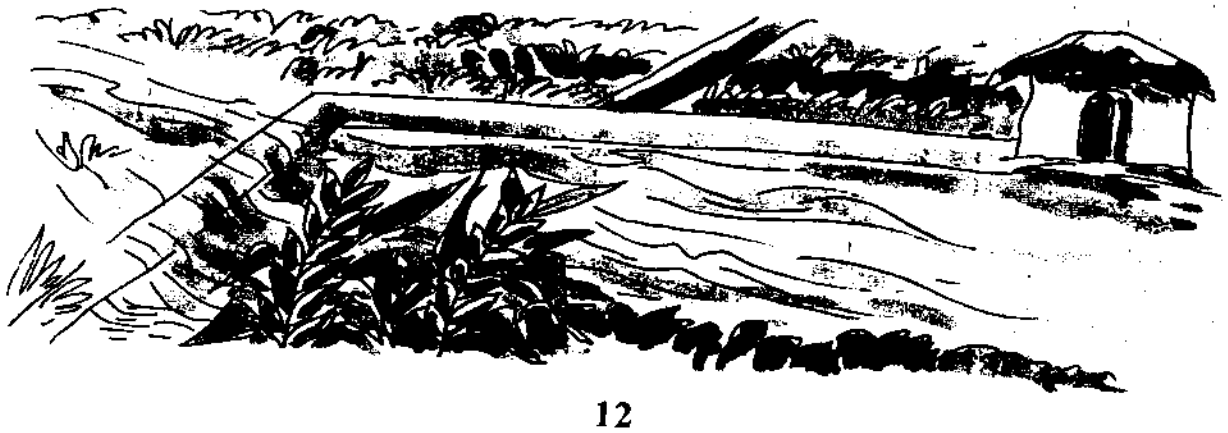

अध्याय-3

# आयल बादरि कारी-कारी

उमड़ि-घुमड़ि कय नभमे आयल

बादरि कारी-कारी ।

पुनि हरियायत खेत-पथारो

हरियर बाड़ी-झाड़ी ।।

पोखरि-डाबर चर-चाँचर मे

भरि जायत पुनि पानि ।

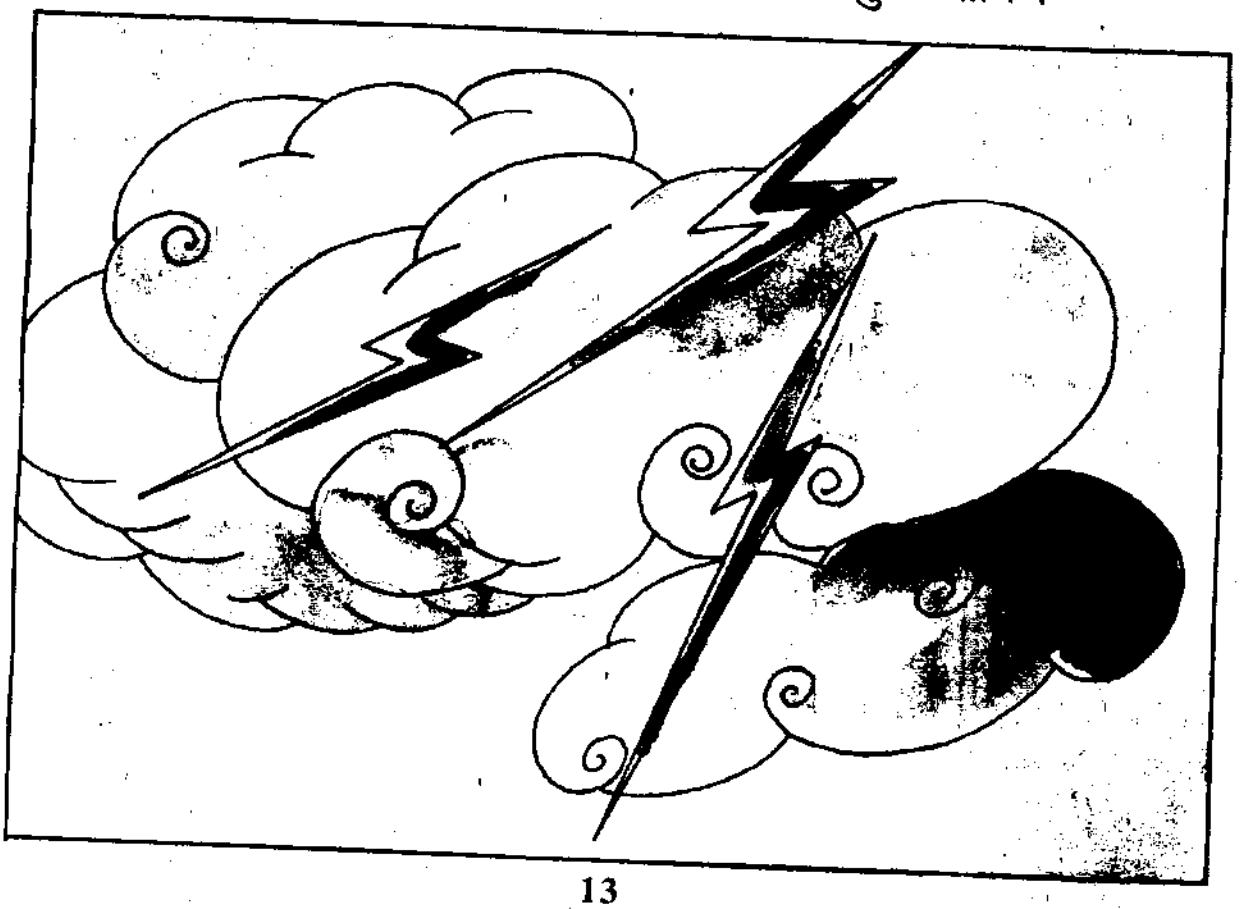

ठंढायत गरमी सँ धीपल

जीवो जन्तुक चानि ॥

गाछ-वृक्ष मे पल्लव होयत,

हँसत कदम्बक गाछ ।

मड़ुआ सँ तेबर कय भेटत

आब उजहिया माछ ॥

तीमन-तरकारी सभ सस्ता

सस्ता होयत लताम।

हँसी-खुशी सँ पुनि भरि जायत

उजड़ल-उपटल गाम ।।

शिवाकान्त पाठक

## प्रश्न ओ अभ्यास

1. एहि प्रश्नक उत्तर दिअ

   (क) वर्षा भेला पर धरतीक रूप केहन भय जाइत छैक ?

   (ख) वर्षाक उपरान्त जीव-जन्तु केहन अनुभव करैत अछि ?

   (ग) हँसी-खुशीसँ पुनि भरि जायत उजड़ल उपटल गामक आशय लिखू।

2. निम्न शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू।

   हरियर, गरमी, धीपल, माछ

3. भाषा-अध्ययन

   निम्न युग्म-शब्दकेँ देखू आ एकरा अतिरिक्त युग्म-शब्दक सूची बनाउ।

   उमड़ि-घुमड़ि, खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ी, चर-चाँचर, जीव-जन्तु, गाछ-वृक्ष, तीमन-तरकारी, हँसी-खुशी, उजड़ल-उपटल।

4. योग्यता-विस्तार

   (क) एहि कविताक अतिरिक्त वर्षा-ऋतुसँ सम्बन्धित आन कविता सभक संग्रह करू।

   (ख) वर्षा भेलाक बाद कोन-कोन फसिलक रोपनी होइत छैक ? सूचना एकत्र करू।

5. कठिन शब्दक अर्थ

नभ–आकाश

पल्लव–गाछमे आयल नव पात

मड़ुआ–एक प्रकारक अन्न

चानि–माथक उपरका भाग

■

अध्याय-4

# कबड्डी

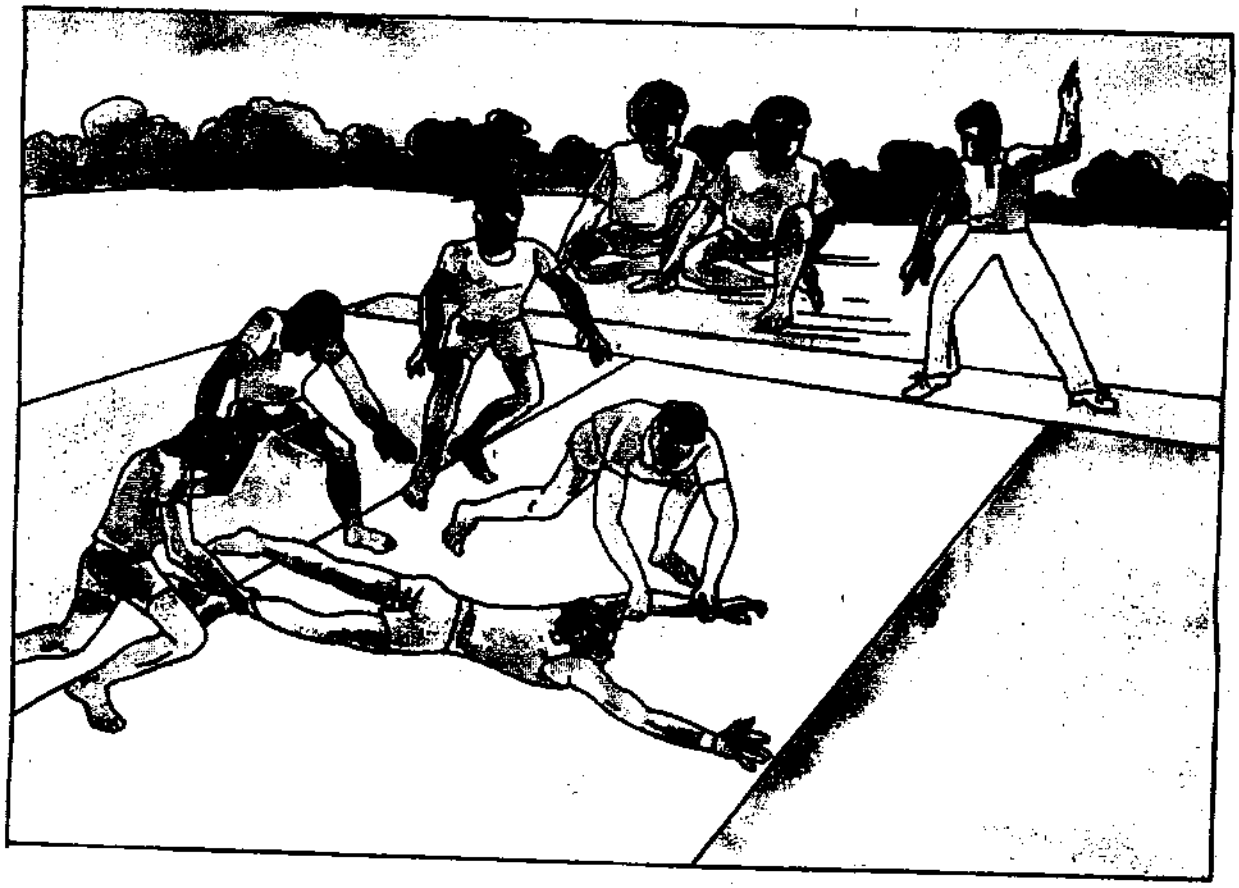

कबड्डी हँसी-खुशीक खेल थिक।

कबड्डी भारतक सभ प्रान्तमे प्रचलित अछि। ई राष्ट्रीय खेल थिक।

कबड्डीक विशेषता थिक, एकर सरलता। दोसर विशेषता थिक ई जे एहिमे कोनो प्रकारक खर्चक आवश्यकता नहि रहैत छैक।

कबड्डी थिक मस्ती आ उमंगक खेल। कोनो लम्फ-लम्फाक आवश्यकता नहि। बस, थोड़ेक खुसफैल जगह चाही आ चाही

खेलनिहार खेलाड़ी। खेल शुरू भय गेल–कबडी·····कबडी·····
कबडी·····कबडी····· ।

कबड्डी कोनो ठाम भय सकैत अछि। दलानक बाहर, खरिहानमे, मैदानमे, परता जगहमे, परती–पराँतमे अथवा गाछीमे संगतुरिया खेलाड़ी जमा होइत अछि। पहिने दू व्यक्ति मधुबीत बनैत अछि। प्रत्येक मधुबीत अपना दलक नायक होइत आछि। दुनू मधुबीत अपन–अपन दल बनबैत अछि। खेलाड़ी, जकरा खेड़ा सेहो कहल जाइत छैक, से समान संख्यामे दू दलमे बाँटि जाइत अछि। प्रत्येक दलक सदस्य अपना दलमे गोधिञा कहल जाइत अछि। आब मैदानक बीचो–बीच एकटा डाँरि पाड़ल जाइत छैक। डाँरिक दुनू कात दलक अपन–अपन घर कहल जाइत छैक। डाँरि दुनू घरक सिमान रहैत छैक।

आब खेल शुरू होइत अछि। एक घरक एक खेड़ा सिमान टपि कय दोसर घरमे जाइत अछि। दोसर घरक सभ खेड़ा ओकरा पकड़बा लय सावधान भय जाइत अछि। जयबा काल ओ एके साँसमे कोनो फकड़ा पढ़ैत जाइत अछि। जँ ओ बिना साँस तोड़नहि दोसर घरक खेड़ाकेँ छूबि कय सिमान टपि कय अपना घरमे चल अबैत अछि, तँ दोसर घरक ओ छुइलहा खेड़ा सड़ि जाइत अछि आ खेलसँ हटि कय बैसि रहैत अछि। से, जतेक गोटे छुइल जायत से सब खेड़ा सड़ि जायत। जँ नहि, दोसरे घरक खेड़ा अपना घरमे पहिल घरक खेड़ाकेँ पकड़ि लेलक, आ ततबा काल धरि पकड़ने रहि गेल, जा धरि ओकर साँस टुटि ने जाइक, तँ पकड़ल गेल खेड़ा सैह सड़ि जाइत अछि। आ वैह मैदानसँ हटि जाइत अछि।

आब दोसर घरक खेड़ाक पार अबैत छैक। ओहो ओही प्रकारे विपक्षीक सीमामे प्रवेश करैत अछि तथा की तँ विपक्षी खेड़ाकेँ सड़ौने चल अबैत अछि अथवा अपनहि पकड़ा कय सड़ि जाइत अछि। कखनो एहनो होइत छैक जे बिनु किछु पौने वा गमौने आपस चल अबैत अछि।

विपक्षीक जतेक खेड़ा सड़ैत अछि, अपना दलक ततेक खेड़ा, जँ सड़ल रहल, तँ जीवि जाइत अछि। कोनो दलमे जखन सब खेड़ा सड़ि जाइत अछि आ एक्के गोट खेड़ा बचि जाइत अछि, तखन ओ गुम्मा कहबैत अछि। ओ गुम्म रहै अछि। ई गुम्मा खेड़ा विपक्षीक सीमामे प्रवेश करैत अछि आ विपक्षी खेड़ाकेँ कोनहुना छूबि सड़यबाक चेष्टा करैत अछि। गुम्म रहबाक कारणे ओकरा साँस टुटबाक डरे ने रहैत छैक, तेँ ओ कतबो काल धरि विपक्षी सीमामे रहि सकैत अछि। विपक्षी दलक चेष्टा रहैत छैक जे कोनो प्रकारेँ गुम्माकेँ पकड़ि कय सकपंज कय दी ओ सीमा रेखाकेँ छूबय नहि दी। जँ गुम्मा खेड़ा पकड़ल गेला पर प्रयत्न कय कय, कोनो प्रकारेँ डाँरिकेँ छूबि लेलक, तँ ओकरा पकड़निहार विपक्षी खेड़ा सब सड़ि जाइत अछि। मुदा विपक्षी दल से होबय नहि दैत छैक। ओ सब गुम्माकेँ पकड़ि ओकर दाँत देखबाक चेष्टा करैत छैक जँ गुम्माक दाँत देखार भय जाइत छैक, तँ ओहो सड़ि जाइत अछि। गुम्माक दल हारि जाइत छैक। विपक्षी जीति जाइत अछि। ओकर डाली भय जाइत छैक। ओ जतेक बेर जीतैत अछि ततेक डाली होइत छैक। हारल दल अगिला बेर जीति गेल तँ डाली उतरि जाइत छैक।

हँ, गुम्मा जँ विपक्षीक खेड़ाकेँ सड़ा कय अपन सीमामे चल जाइत अछि, तँ जतेक गोटेकेँ सड़ा कय आयल रहैत अछि, अपना दलक ओतेक सड़ल खेड़ा जीबि जाइत छैक।

कबड्डीमे फकड़ा पढ़ल जाइत छैक। एही फकड़ाक पाठसँ अन्दाज होइत छैक जे साँस टुटलैक वा नहि। 'चेत कबड्डी आरा, सुलतान गोली मारा, चिडैएँ केँ लोट पोट पलटन केँ मारा' पढ़ल जाइत अछि, तँ कतहु पढ़ल जाइत अछि–'चेत कबड्डी आनमे मारब झटहा कानमे, फेकि देबौ मैदानमे, आदि। कतहु सोझे 'कबडी-कबडी' 'तो तो तो तो', 'ता ता ता ता' इत्यादि पढ़ल जाइत अछि।

कबड्डी सँ साँसकेँ अधिकाधिक काल धरि रोकबाक शक्ति बढ़ैत छैक। कार्य करबाक क्षमता बढ़ैत छैक। कार्य कयने थाकनि नहि होइत छैक। दम नहि फूलैत छैक। लोक जीबैत अछि, नीरोग रहैत अछि।

कबडी केवल मनोरंजने नहि दैत अछि, खेल-खेलमे अनेको प्रकारक पाठ पढ़ा दैत अछि। कबडी थिक सामूहिक खेल। दू दलक प्रतिस्पर्द्धाक खेल। कबड्डी सँ आत्मरक्षा ओ आत्मविश्वासक भावना जगैत छैक।

कबड्डी सँ एकताक भावना विकसित होइत छैक। आक्रमणसँ अपन सीमाक रक्षा कोना करी। प्रतिपक्षीकेँ कोना पराजित करी। एहि सब बातक प्रशिक्षण स्वतः भेटि जाइत छैक। खेल-खेलमे भेटल ई शिक्षा कबड्डीक खेलाड़ीकेँ राष्ट्ररक्षा दिस उन्मुख कय दैत अछि जे शत्रु यदि हमरा सीमामे आबि जाय तँ ओकरा पकड़ि ली। घूमि कय जाय नहि दी। ओकर दम तोड़ि दी। अपन सीमाक रक्षामे

सतत चौकस रही। यदि शत्रुपक्ष दुस्साहस कय दिअय तँ आखरी दम धरि अपन भूमि, अपन सीमाक रक्षा करैत रही।

खेल खेलयबाक चाही। कबड्डी बिनु खर्चक खेल थिक। तेँ सबकेँ खेलबाक चाही। परन्तु कबड्डी तेना नहि खेलाइ जे ककरो गम्भीर चोट लागि जाइक, ककरो हाड़–पाँजर टूटि जाइक, कान–कपार फूटि जाइक। खेल कालमे क्यो अपन दलक रहैत अछि तँ क्यो विपक्षी दलक। मुदा रहैत अछि सब अपने भाइ–बन्धु, संगी–साथी, हित–मीत। जितने अहंकार नहि करी आ हारने रोष–विषाद ने करी।

कबड्डी हँसी–खुशीक खेल थिक। हँसी–खुशीसँ खेलयबेमे आनन्द छैक।

**भीमनाथ झा**

## प्रश्न ओ अभ्यास

☐ एहि प्रश्नक उत्तर दिअ

1. कबड्डीक विशेषता की सब छैक ?
2. कबड्डीक खेल लय की सब चाही ?
3. मधुबीत ओ गोधिआक ककरा कहल जाइत छैक ?
4. गुम्मा खेलाड़ी के होइत अछि ? एकर गुम्मा नाम किएक देल गेलैक ?
5. साँस रोकबाक अभ्याससँ की लाभ होइत छैक ?
6. कबड्डी खेलसँ की की लाभ होइत अछि ?
7. कबड्डी खेलमे कोन बातक ध्यान राखब आवश्यक अछि ?
8. खेल-भावना की थिक ?

☐ भाषा अध्ययन :

जाहिसँ कार्य करबाक बोध हो तकरा क्रिया कहल जाइत छैक। जेना 'पकड़ब' दौड़ब, खेलब, पढ़ब, कूदब, फानब आदि।

1. एहि पाठमे आयल क्रिया शब्दक संग्रह करू।

## ☐ योग्यता-विस्तार :

1. अहाँक गाममे कबड्डी कोना खेलायल जाइत अछि तकर वर्णन अपन कापी पर लिखू।
2. कबड्डीक आन-आन फकड़ा सभक संग्रह करू आ अपन मित्रकेँ सुनाउ।
3. अपना इलाकामे प्रचलित कोनो दोसर खेलक वर्णन करू।
4. फुटबौलक सम्बन्धमे अपन शिक्षकसँ जानकारी लिय।

## ☐ शब्दार्थ :

प्रान्त–राज्य

उमंग–बहुत प्रसन्नता

खुशफैल-विस्तृत, पैघ

परता–खाली पड़ल जमीन

संगतुरिया–संग रहयवला, संग कार्य कयनिहार

सकपंज–असमर्थ

चौकस–सतर्क, सावधान।

■

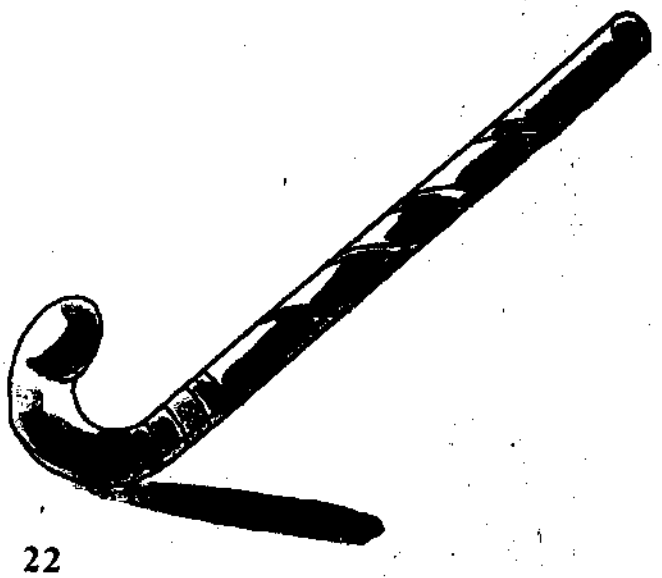

अध्याय-5

# नीरोग रहबाक उपाय

गामक पूब पोखरिक भीड़ पर रग्घू गुरुजीक चटिसार छलैन्हि। गामक सब चटिया हुनके ओहिठाम पढ़बा लेल आबय। गुरुजी सब चटियासँ कसरत कराबथि। तैँ हुनक चटिया खूब नीरोग तथा पढ़बामे तेज रहैन्हि।

बैजू तीनि-चारि माससँ ओहि चटिसारमे पढ़ैत रहय। ओ सब चटियासँ निबल छल। लक-लक पातर। सदिखन ओकर मन खन-खन करैत रहैक। ओ बेशी काल गरहाजिर भय जाय। कहिओ ओकर पेट फूलि जाइ, तँ कहिओ माथ दुखाय लगैक। बेचारा ठीकसँ पढ़ियो नहि सकैत छल। गुरुजी बहुत चेष्टा कयलैन्हि, किन्तु बैजूक स्वास्थ्यमे सुधार होयबे नहि करय। एक दिन गुरुजी बैजूक आङन गेलाह। ओकरा मायसँ सब हाल पुछलथिन्ह। माय ओकर खेबा-पीबाक हाल कहि सुनौलथिन्ह।

दोसर दिन बैजू जखन पढ़ैक हेतु गेल तँ गुरुजी ओकरा अपना लग बजौलन्हि। पुछलथिन्ह जे-"तोँ एना दुबरायल किऐक जाइत छह ?"

बैजू बेचारा की जानय गेल जे ओ किऐक एना पिलपिलाह भेल जाइत अछि ? ओ टुकुर-टुकुर गुरुजीक मुँह ताकय लागल।

गुरुजी बजलाह–"देखह, हम काल्हि तोरा आङन गेल छलहुँ। हमरा सब बात बूझयमे आबि गेल अछि। तोरा रोगक कारण हम कहैत छियौह। तोरा खेबा-पीबाक कोनो ठेकान नहि रहैत छौह। जैखन पबैत छह तैखन खा लैत छह। कहिओ कौआ नहि डकल कि खा लैत छह आ कहिओ टगलीबेर तक भुखले रहि जाइत छह। तैँ तोरा सर्दी भय जाइत छौह। बेसीकाल बाजारक बासि-तेबासि पूड़ी मिठाइ खाइत

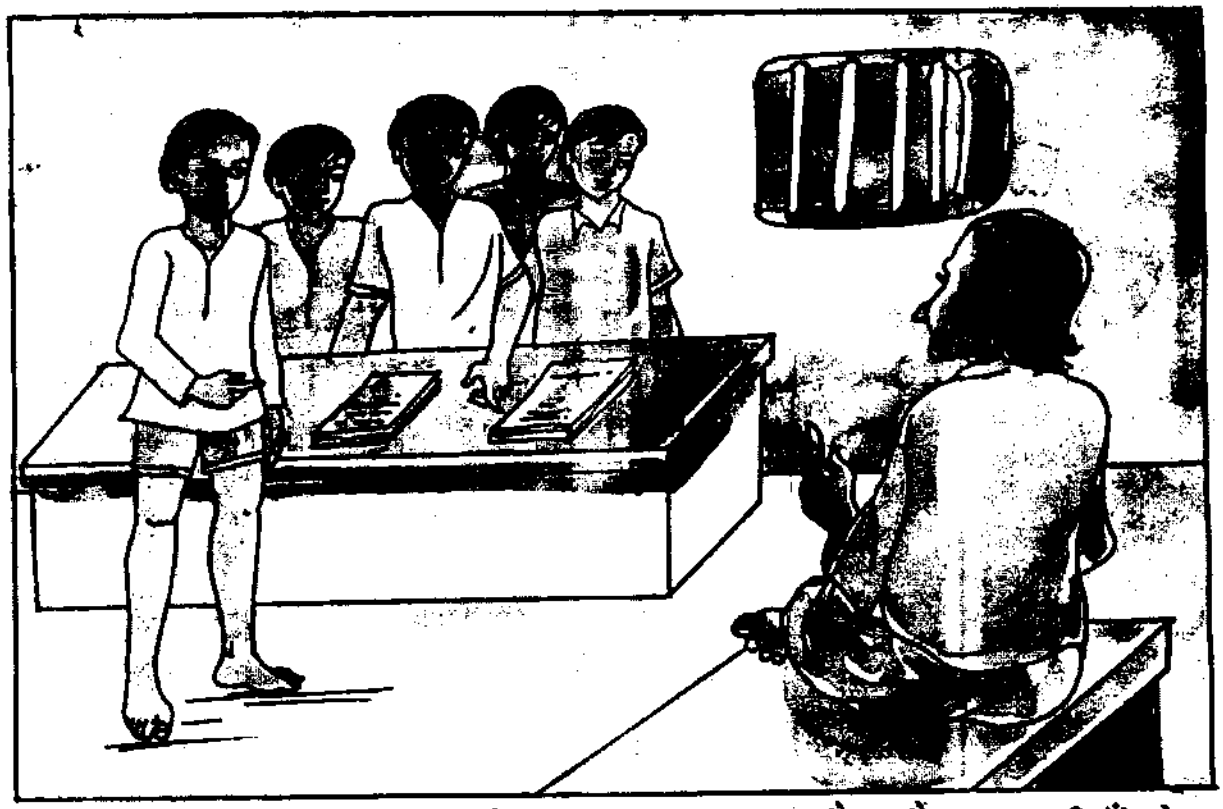

छह। ओहि पर भरि दिन गर्दा उड़ि-उड़ि कय पड़ैत छैक। एहीसँ तोहर पेट गड़बड़ा जाइत छौह। बिना भूखोकेँ खा लैत छह ताहीसँ तोरा अनपच होइत छौह। ई सब आदति जाबत नहि छोड़बह ताबत निकैँ नहि रहि सकैत छह आ जखन समाङे नहि रहतौह तखन पढ़बह की। समाङे रहने सब किछु किने?"

बैजू बाजल–"से तँ ठीके कहैत छी गुरुजी। आबसँ हम अपनेक कथा करब। हम कोना निकैँ रहब से उपाय कहल जाय।"

गुरुजी कहलथिन्ह–"सुनह, खूब भोरे उठि कय ट्टीसँ फरागति भय जाइ। मुँह-हाथ धोय थोड़ेक काल बाध दिसिसँ टहलि आबी। तकरा बाद पाव भरि टटका दूध पीबि ली। टटका दूध काँचे पीलासँ वेसी लाभ होइत छैक, नहि तँ औँटल पीबी। जलखइमे आरो कोनो वस्तुक आवश्यकता नहि। नौ-दस बजेक समयमे कलौ खाइ। अन्नकेँ खूब चिबाय खैबाक चाही, तखन जल्दी पचैत छैक। खेला-पीलाक बाद थोड़ेक काल आराम करी तखन अपन काज करी।

"पाँच बजे फेर बेरहँट खाइ। ओहि समयमे फले-फलिहार उत्तम होइत छैक। गर्मीमे टटका फल जाड़मे सुखायल फल बेसी गुण करैत छैक।

"रातिमे आठ या नौ बजे ठीक समय पर कलौ खाइ। पेटमे जतेक जगह हो तकर आधा खाइ आधा पानि पीबि कय भरी। बाकी एक चौथाई हवाक हेतु खाली छोड़ि दी। जखन खूब भूख लागय तखन खाइ आ थोड़ेक भूख रहिते थारी परसँ उठि जाइ। एहि नियम सभक पालन कयलासँ तोँ कहियो दुखित नहि पड़बह। ई नियम सब दिन स्वस्थ रहबाक थिक।"

ताहि दिनसँ बैजू गुरुजीक कहल नियम पर काज करय लागल। थोड़बेक दिनमे ओकर सुकठी सनक देह फुलिकेँ लाल मुङबा भय गेलैक।

**मै० शि० सा०**

## प्रश्न ओ अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअ

1. गुरुजीक नाम की छल ?
2. बैजू के छल ?
3. बैजू अधिक काल गरहाजिर किएक रहैत छल ?
4. बैजूक रोगक की कारण छल ?
5. बैजू स्वस्थ कोना भेल ?
6. नीरोग रहबाक लेल की-की करबाक चाही ?

(ख) एहि शब्द सभक समान अर्थवला शब्द लिखू

चटिया– ....., गरहाजिर– .....

कलौ– ....., बेरहट– .....

सुकठी– ....., पिलपिलाह– .....

(ग) निम्न पाँतीकेँ शुद्ध करू–

1. गुरुजीक चटिसार गामक पश्चिम पोखरिक भीड़ पर छलैन्हि।
2. एक दिन गुरुजी बैजूक बापसँ ओकर सब हाल पुछलनि।
3. बैजू गुरुजीक कहल नियम पर कार्य नहि करय लागल।

(घ) खाली जगहकेँ उपयुक्त शब्दसँ भरू :–

1. सदिखन ओकर मन ..... करैत रहैक।
2. तोँ एना ..... किएक जाइत छह ?
3. तोरा खेबा-पीबाक ..... नहि रहैत छह।
4. बेसीकाल ..... बासि-तेबासि पूरी, मिठाई खाइत छह।

### ☐ भाषा अध्ययन

सर्वनाम : संज्ञा शब्दक बदलामे जखन कोनो आन शब्दक प्रयोग कयल जाइत छैक, तकरा सर्वनाम कहल जाइत छैक। जेना - हम, अहाँ, ओ, तोँ आदि।

(1) अहाँ अपन घर-परिवार, संगी सबसँ पूछि सर्वनाम-शब्दक संकलन करू।

## ☐ अभ्यास-कार्य

(1) नीरोग रहबाक हेतु हमरा सबकेँ की सब करबाक चाही, तकर सूची बनाउ।

(2) अपन विद्यालयकेँ कक्षाक संगी सभक सहयोगसँ स्वच्छ बनाउ।

(3) छूआछूत एवं गंदगीसँ होअय बला बीमारीक सूची एवं ओहिसँ बचबाक उपायकेँ एकटा कागज पर पैघ अक्षरमे लिखि वर्ग मे टाँगू।

## ☐ शब्दार्थ

चटिसार–विद्यालय

निबल–कमजोर

खन-खन–बिमरियाह

पिलपिलाह–खराब स्वास्थ्य

टगली बेर–अबेर धरि

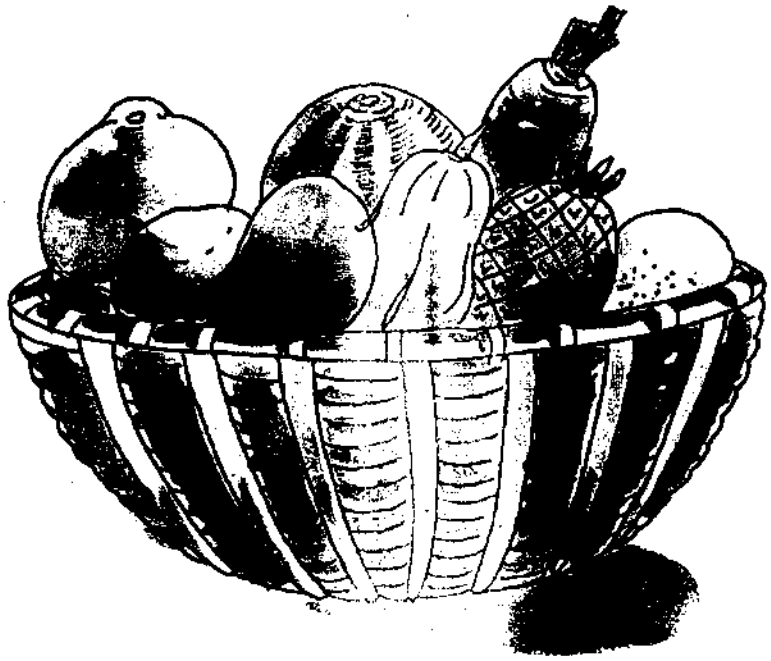

अध्याय-6

# नीति-पद

एक बेर कहने जे सीखय, बिसरय नहि सुनलाहा बात ।
जकर बुद्धि धारणामे सक्षम से थिक मेधावी विख्यात ।।

रहितहु देहेँ भिन्न हृदय सँ एक होइत छथि मित्र पवित्र ।
सुख दुखमे नहि संग देथि तँ थिका तेहन सन्दिग्धे मित्र ।।

धनमे उत्तम धन थिक विद्या देनहु जे न घटैछ ।
राजा, चोर, देयाद केयो नहि छिनि, हरि, बाँटि सकैछ ।।

नेना मे सिखलक नहि विद्या यश न कमायल होइत जवान ।
माता केँ दुखदायक बेटा जनमि जन्म केँ करय जियान ।।

**( पुरुष-परीक्षासँ )**

**अनुवादः चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'**

## प्रश्न आ अभ्यास

**( क ) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअ**

1. **मेधावी ककरा कहल जाइछ ?**
2. **सन्दिग्ध मित्र के थिकाह ?**
3. **सभसँ उत्तम धन की थीक ?**

4. कोन धनकेँ ने क्यो चोरा सकैछ आने बाँटि सकैछ ?

5. कोन वयसमे विद्या अर्जन कयल जाइछ ?

(ख) समान अर्थबाला शब्द लिखू

मित्र ..... पवित्र .....

नेना ..... माता .....

जियान ..... धारणा .....

(ग) एहि नीति पदक अर्थ लिखू

(घ) एहि नीति पदक अतिरिक्त कोनो अन्य नीति पदक संग्रह करू।

(ङ) पाठमे प्रयुक्त संयुक्ताक्षरकेँ संग्रह कय लिखबाक अभ्यास करू।

(क) निम्न युग्म-शब्दकेँ देखू आ एकरा अतिरिक्त युग्म-शब्दक सूची बनाउ।

उमड़ि-घुमड़ि, खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ी, चर-चाँचर, जीव-जन्तु, गाछ-वृक्ष, तीमन-तरकारी, हँसी-खुशी, उजड़ल-उपटल।

## ☐ शब्दार्थ

संदिग्ध-सन्देह, धारणा-विचार, विख्यात-प्रसिद्ध,
उत्तम-बढ़िया, जिआन-नष्ट

अध्याय-7

# एकटा चिनमा खेलियै रौ भैया

कोनो पहाड़क कातमे एकटा खेतमे चीन छलै। चीन धरती फाटिकय उपजल छलै। किछु मुनिया सभ दिन ओहि खेतसँ चीनक बालि खोंटि कय लयजाय। किछु दिनक बाद खेतवला खेत देखय गेल तँ देखलक जे एक हेंज मुनिया चीन पर लुबधल अछि। ओ तामसे माहुर भयगेल। दोसर दिन ओ खेतमे जाल लगा देलक। जाल छोट रहै तेँ भरि खेत तँनहि भेलै–बस एक कोनमे पसरलैक। बेचारी मुनिया सभ की जानय गेल। ओ सभ अपन समयसँ फेर पहुँचल। संयोगसँ एकटा मुनिया ओहि जालमे फँसि गेल। खेतवला ओकरा पकड़ि आपस भय गेल। मुनिया निहोरा-मिनती बड़ केलकै मुदा खेतबला तते ने तमसायल छल जे किए छोड़तै। जखन बाटमे चल अबैत रहय तँ एकटा लोक बरद हँकने चल जाइत छल। मुनिया ओकरा देखि पैरबी करैत कहलकै–

बड़दबला भाइ !
परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता
भुखे मरै छै बच्चा
एकटा चिनमा खेलियै रौ भैया
तइ लय पकड़ने जाइए।

बड़दबलाकेँ दया लागि गेलैं। ओ खेतवलाकेँ बुझबैत कहलकै, जे मुनियाकेँ छोड़ि दहक। मुदा ओ किएक सुनतै। ओ तँ एकेठाम जिद धेने छल जे मुनियाकेँ मारि मसुआइ बना कय खायत। अन्तमे बरदबला अपन बरदो देब गछलकै तैयो ओ नहि मानलकै आ आगू बढ़ि गेल।

किछु दूर गेलाक बाद एटा घोड़हिया अबैत रहय। मुनिया ओकरो मिनती केलक–

घोड़ावला भाइ !

परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता

भूखे मरै छै बच्चा

एकटा चिनमा खेलियै रौ भैया

तइ लय पकड़ने जाइए।

घोड़हियोकेँ मुनियाक अवस्था पर दया लागि गेलै। ओहो खेतबला केँ बुझबय लागल। जखन ओ कनियो टस सँ मस नञि भेलै त बदलामे अपन घोड़ा दय देनाइ गछि लेलकै मुदा खेतबला किएक टेरितै। ओ आगू बढ़ि गेल।

मुनिया आर थोड़ेक दूर गेल त एकटा हाथीबला चल अबैत रहय। मुनिया फेर अपन अरजी केलक–

हाथीबला भाइ !

परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता

भूखे मरै छै बच्चा

एकटा चिनमा खेलिय रौ भैया

तइ लय पकड़ने जाइए।

हाथीबला अपन हाथी रोकलक आ खेतबलासँ निहोरा-मिनती केलकै जे ओ मुनियाकेँ छोड़ि दैक। छोट-छीन मुनिया ओकर कते चीन खेने हेतै–बदलामे ओ हाथियो दयसकै छइ। मुदा खेतबला ओकरो ने गुदानलकै आ आगू बढ़ि गेल।

ताबत अकालबेरा भयगेल रहैक। खेतबलाकेँ भुखे-पियासे मन ऑट भय छलैक। बाटक मे एकटा गाछ तर कोनो बटोही बैसल खुद्दी

फाँकि रहल छल। खेतबला भुखायल छलैके, मुँहसँ पानि खसय लगलै। मुनिया बटोहीकेँ देखि फेर मिनती केलक–

खुद्दीबला भाइ !

परबत पहाड़ पर खोंता रे खोंता

भूखे मरै छै बच्चा

एकटा चिनमा खेलियै रौ भैया

तइ लय पकड़ने जाइए।

खुद्दीबलाकेँ सेहो मुनिया पर दया लागि गेलै।

ओ खेतबलाकेँ कहलकै–हओ।

दया नहि लगै छह ? एकर बाल-बच्चा औनाइत हेतै। इहो बेचारी कते कलपैये। जँ बिदति कइए देलक तँ से आब घुरि नहिये अओतह। छोड़ि दहक एकरा। तोरो त भूख पियास लगले हेतह। बरु लएह हमर खुद्दी, फाँकह आ पानि पीबह जे मन शान्त हेतह।

बेचारा खेतबलाकेँ भूख तँ लगले छलै। ओ खुद्दीक बदलामे मुनियाकेँ छोड़ि देलकै आ खुद्दी फाकय लागल। मुनिया उड़िकय खोंतामे चलि गेल।

**राम लोचन ठाकुर**

## प्रश्न ओ अभ्यास

**(क) एहि प्रश्न सभक उत्तर दिअ–**

1. **मुनिया सब दिन खेत मे की करय जाइत छल ?**
2. **खेत कतय छल ?**

3. मुनियाकेँ के पकड़ने जाइत छल ?

4. मुनिया अपन जान बचयबालय ककरा-ककरासँ नेहारा कयलक ?

5. बड़दला खेतबलाकेँ की देब गछलक ?

6. घोड़ाबल खेतबलाकेँ की देब गछलक ?

7. हाथीबला खेतबलाकेँ की देब गछलक ?

8. खुद्दीबला खेतबलाकेँ की देलक ?

9. खेतबला मुनियाकेँ कोना छोड़लक ?

10. एहि कथासँ अहाँकेँ की शिक्षा भेटैत अछि ?

(ख) निम्न शब्दक अर्थ लिखू–

हेंज, तामस, बाट, बटोही

(ग) पाठसँ संयुक्त अक्षरबला शब्द चुनि कय पाँच-पाँच बेर लिखू।

(घ) खाली स्थानकेँ भरु–

1. बड़दबला भाइ !

परबत पहाड़ पर .....

2. ताबत अकलबेरा भय गेल रहैक। खेतबलाकेँ ..... मन आँट भय गेल ..... ।

3. बरु लयह हमर खुद्दी, फांकह आ पानि पीबह ..... मन ..... ।

(ङ) भाषा-अध्ययन

जाहि शब्दसँ ककरो द्वारा काज करबाक बोध हो, तकरा क्रिया-शब्द कहल जाइत छैक। जेना, पढ़ब, लीखब, खायब, जायब, आदि।

1. एहि पाठमे आयल क्रिया शब्दक सूची बनाउ।

(च) 1. अहाँ गाम-घर, खेत-पथारमे कोन-कोन चिड़ै देखैत छी; तकर सूची बनाउ।

2. चिड़ैक सम्बन्धमे विशेष जानकारी हेतु अपन शिक्षकक संग कोनो जैविक-उद्यान, चिड़ियाघर अथवा कोनो सुन्दर स्थानक यात्रा करू।

3. अपना सभक राष्ट्रीय-पक्षी मोरक चित्र बनाय वर्गमे प्रदर्शित करू।

शब्दार्थ

हेंज–झुण्ड

फाटिकय उपजब–खूब उपजब

पैरबी–विनती/मिनती/आग्रह

जिद धरब–हठ करब

मसुआइ बनायब–मासु बनायब

टेरब–गुदानब

अरजी करब–मिनती करब

निहोरा-मिनती करब–खुशामद करब

बटोही–राही

खुद्दी–चाउरक छोट-छोट टुकड़ी

मुँह सँ पानि खसब–कोनो खाद्य वस्तुकेँ देखि खयबाक जोरगर इच्छा।

बिदति करब–बिगारि देब।

■

# दादी

दादी, सुनल बड़े नामी,
होइछ बैजनाथी 'पेड़ा'।
हमरा हेतु मँगाबी जौँ अहँ,
तौं नहि करब बखेड़ा॥

गया शहरसँ 'तिलबा'
तथा 'लताम' इलाहाबादी।
पैर पड़ै छी, हाथ जोरै छी,
शीघ्र मँगाउ दादी॥

नागपुरी 'समतोला नेंबो'
ओ कश्मीरी 'मेवा'।
जौ मँगबा दी साँच कहै छी
कयल करब हम सेवा॥

'लीची' लाल मुजफ्फरपुर सँ,

शीघ्र मँगाउ दादी।

हाजीपुर सँ 'चम्पा केरा'

मधुबनी सँ 'खादी'॥

–संकलित ( शिशुबोध )

## प्रश्न ओ अभ्यास

(क) निम्न प्रश्नक उत्तर दिअ–

1. बखेड़ा नहि करबाक लेल बच्चा दादीसँ की मङैत अछि ?
2. तिलबा कोन शहरक प्रसिद्ध छैक ?
3. मुजफ्फरपुर किएक प्रसिद्ध छैक ?

4. कवितामे कोन-कोन शहरक नाम आयल अछि ?

5. एहि कवितामे आयल मधुर आ फलक सूची बनाउ।

(ख) सुमेलित करू।

| | |
|---|---|
| (1) बैजनाथ | (च) केरा |
| (2) मधुबनी | (छ) समतोला |
| (3) नागपुरी | (ज) लताम |
| (4) इलाहाबाद | (झ) लीची |
| (5) हाजीपुर | (ञ) पेड़ा |
| (6) मुजफ्फरपुर | (ट) खादी |

(ग) योग्यता-विस्तार

(1) एहि कवितामे आयल शहरकेँ छोड़ि आन शहर सभक सूची बनाउ आ ओकर प्रसिद्धिक कारण सेहो लिखू।

(2) अहाँक इलाकामे कोन-कोन फल भेटैत छैक ? अपन संगी सबसँ मीलि एकटा सूची बनाउ।

शब्दार्थ

नामी–प्रसिद्ध, बैजनाथी–बैजनाथ धामक

बखेड़ा–झंझटि, शीघ्र-जल्दी

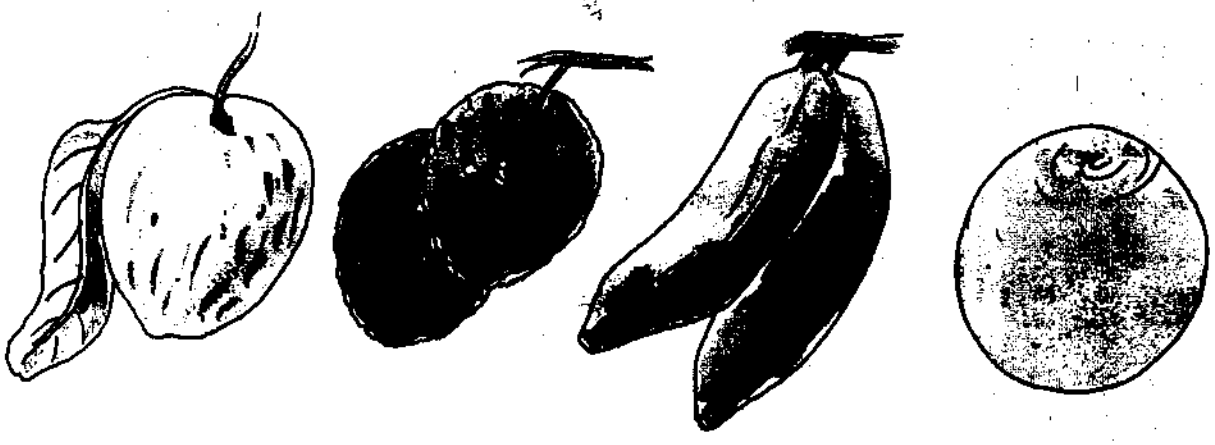

अध्याय-9

# हरिहर क्षेत्रक मेला

भारतवर्षमे जतेक मेला लगैत अछि ओहिमे हरिहर क्षेत्र मेलाक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान छैक। ई मेला प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमाक समय मे करीब एक मासक हेतु लगैत छैक। संसारक कोनो देशमे एहि प्रकारक मेला नहि लगैत छैक।

हरिहर क्षेत्रक मेला सोनपुरमे गंगा एवं गंडकक संगम पर लगैत छैक। हमरा बहुत दिनसँ प्रबल इच्छा छल जे एक बेर हरिहर क्षेत्रक मेला देखबाक अवसर भेटय। एहि बेर भैया दशमी पूजाक छुट्टीमे गाम आयल छलाह। हुनक कतेक अनुनय-विनय कयल तखन ओ कहलन्हि जे बेस, चलह। हमर मोन आनन्दित भेल मेला लगबासँ एक दिन पहिनहि सोनपुर पहुँचि गेलौं।

कहल जाइत छैक जे द्वापर युगमे एक हाथी गंडकक तीर पर पानि पिबैक हेतु गेल। एकटा घड़ियाल ओकरा पकड़ि लेलकैक। ओहि हाथी एवं घड़ियाल के कतेक झगड़ा भेल। मुदा घड़ियाल हाथीकेँ आओर पानिमे खींचने जाय रहल छल। जखन हाथी ई बुझलक जे आब घड़ियाल हमर प्राण लय लेत तखन ओ भगवानक स्मरण कयलक। भगवान अपना भक्तके एहेन विपत्तिमे देखि ओहि हाथीक रक्षा केलथिन्ह

एहि कारणें ई घटना भगवान (हरि) सँ सम्बन्धित अछि। दोसर कथा छैक जे त्रेतायुगमे जखन भगवान रामचन्द्र जनकपुर जाइत छलाह तँ ओहि ठाम आबि ओ शिव मूर्त्तिक स्थापना कयलन्हि। हर (शिव) सँ सम्बन्धित रहलाक कारणेँ एहि स्थानक नाम हरिहर क्षेत्र पड़ल।

हमरा मेला देखि आश्चर्य लागि गेल। सोनपुर-स्टेशन पर उतरलाक बाद जखन मेलाक निकट पहुँचलहुँ तँ ओहि अपार भीड़केँ देखि आश्चर्य भेल। मेलामें बड़का-बड़का दोकान सब खूब नीक जेकाँ सजाओल छल। प्रत्येक वस्तुक दोकान अलग-अलग छलैक। घूमैत-घूमैत हाथी एवं घोड़ाक मेला दिस पहुँचलहुँ। कियो घोड़ा बेचि रहल छल तँ कियो हाथी खरीदि रहल छल। मेलामें लकड़ीक वस्तु सब देखि

आश्चर्य लागि गेल। कपड़ाक दोकान पर जाय एकटा कमीजक कपड़ा हमहुँ किन्लहुँ। मेलामे कतैक संत लोकनि सेहो छलाह। सबसँ आश्चर्य तँ हमरा तखन लागल जखन ओहि ठाम असंख्य भिखमंगाकेँ देखलहुँ। ओकरा लोकनिक दयनीय स्थिति देखि ककर हृदय द्रवित नहि भय जेतैक। ओहि ठाम भगवान पर तामसो भेल जे भगवानक स्थानमे एहि भिखमंगा सब केँ एतेक कष्ट भ' रहलैक अछि। मुदा ओहि भिखमंगा सबकेँ देखि एकटा शिक्षा सेहो पाओल जे भगवानक असल भक्त वैह थीक जे भिखमंगा सबहक सेवा करैत अछि।

आईकाल्हुक समयमे तँ ई स्थान व्यापारिक केन्द्र भय गेल अछि। कपड़ासँ लय पशु धरि एहि ठाम बेचल जाइत अछि। सिनेमा-नाटक सेहो चलैत अछि। देहातक लोक सिनेमा कम्मे देखने रहैत अछि तैं मेलामे बहुतो लोक सिनेमा देखबाक हेतु जाइत अछि। एहिसँ सरकारकेँ सेहो खूब आमदनी भय जाइत छैक। हमरा तँ सिनेमा एवं सर्कस दुनू देखबाक अवसर ओही मेलामे भेटल।

सरकार सेहो जनताक सुविधाक हेतु बहुत कार्य एहि मेलामे करैत छैक। अस्तु। हमरातँ बड़ नीक लागल। हम तँ कहब जे अहूँ सब एक बेर ऐहि मेलामे अबस्से घूमि आउ।

**बालगोविन्द झा 'व्यथित'**

## प्रश्न ओ अभ्यास

**(क) निम्न प्रश्नक उत्तर दिअ**

1. **हरिहर क्षेत्रक मेला कतय लगैत छैक ?**
2. **मेलाक स्थानक नाम हरिहर क्षेत्र कोना पड़ल ?**

3. हरिहर क्षेत्रक पाछू कोन पौराणिक-कथा प्रचलित अछि ?

4. हरिहर क्षेत्रक मेलामे की सब बिकाइत छैक ?

5. हरिहर क्षेत्रक मेलामे घुमलाक बाद लेखककेँ की शिक्षा भेटलनि ?

(ख) एहि शब्दक मिलैत-जुलैत अर्थ बला शब्द लिखू।

हाथी, हरि, हर, घोड़ा, कष्ट

(ग) भाषा-अध्ययन :

एहन शब्द सबहक समूह जे सुनबामे एके समान हो परन्तु अर्थ भिन्न-भिन्न हो, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहल जाइत छैक।

जेना–हर (शिव), हरि (विष्णु भगवान)

1. सुनबामे एक तरहक, मुदा भिन्न अर्थक शब्द सभ, जे अहाँ कतौ सुनैत छी वा बजैत छी, तकर एकटा सूची बनाउ।

(घ) योग्यता-विस्तार :

1. हरिहरक्षेत्रक मेलाक अतिरिक्त जँ अहाँ कोनो आन मेला देखने छी तँ ओकर वर्णन वर्ग मे करू।

2. अहाँक इलाकामे जँ एहन कोनो प्रसिद्ध स्थान छैक तँ ओकरा सम्बन्धमे सूचना एकत्र करू।

शब्दार्थ :

अनुनय-विनय–विनती, नेहोरा

घड़ियाल–जलमे रहबला एक प्रकार जीव, मगर

स्मरण–याद

आश्चर्य–अजगुत

असंख्य–अनगिनत

तामस–खीस, खिसिआयब

■

अध्याय-10

# बानर

नाम हमर थिक बानर
हम फानी बाहा ओ कानर ।।
हम फुनगी पर चढ़ि जाइ
कनिओ ने कतहु डेराइ ।।

हम कतहु ने रोपी गाछी
पहिलुक फल हमही चाखी ।।
हम खेतहुमे पटि जाइ
खेरही ओ मरुआ खाइ ।।
धानक ओ गहुमक सीस
हम नोचि-नोचि दस बीस ।।
किछु सुररि सुररिकेँ फाँकी
छिड़िआबी ठामहि बाँकी ।।
हम नारिकेर नहि खाइ
भुखले बरु रहि जाइ ।।

उग्रनाथ झा

## प्रश्न ओ अभ्यास

1. एहि प्रश्नक उत्तर दिअ–
   (क) बानर की सब करैत अछि ?
   (ख) बानर कोन-कोन उपद्रव करैत अछि ?
   (ग) बानर नारिकेर किएक नै खाइत अछि ?
   (घ) एहि कविताक अनुसार बानर की सब नहि करैत अछि।
2. वाक्यमे प्रयोग करू
   फुनगी, गाछी, फल, नारिकेर, खेत
3. (क) एहि कवितामे जे किहु कहल गेल अछि, तकर अतिरिक्त बानर की सब करैत अछि ?
   (ख) बानरक अतिरिक्त कोन-कोन जीव फसिलकेँ नष्ट करैत अछि ?

(ग) कोन-कोन जीवकेँ मनुष्य पोसैत अछि ?

(घ) कोन-कोन जीव फनैत अछि ?

(ङ) शाकाहारी एवं मांसाहारी जीवक सूची बनाउ।

(च) अपना ओतय उपजय बला अन्नक सूची बनाउ।

4. भाषा अध्ययन :

कोनो व्यक्ति, वस्तु ओ स्थानक नामकेँ संज्ञा कहल जाइछ। जेना-राम, मोहन, गंगा, वानर आदि एहि पाठसँ संज्ञा शब्द चुनू।

बाहा- कानर- सीस- सुररि-सुररि-

शब्दार्थ :

बाहा–पानि बहैक बाट, नाला, नाली

सुररि-सुररि–सुरड़ब, डंटी सँ सबटा फूल पत्ती वा फल तोड़िकय सुन्न कय देब

सीस–धान आदि अन्नक दानाक गुच्छ।

बरु–भने

फुनगी–गाछक सबसँ उपरका भाग

पटि जायब–पसरि जायब/फैल जायब

चाखी–चाखब, स्वादब, चीखब

खेरही–एक प्रकारक अन्न/मूँग

■

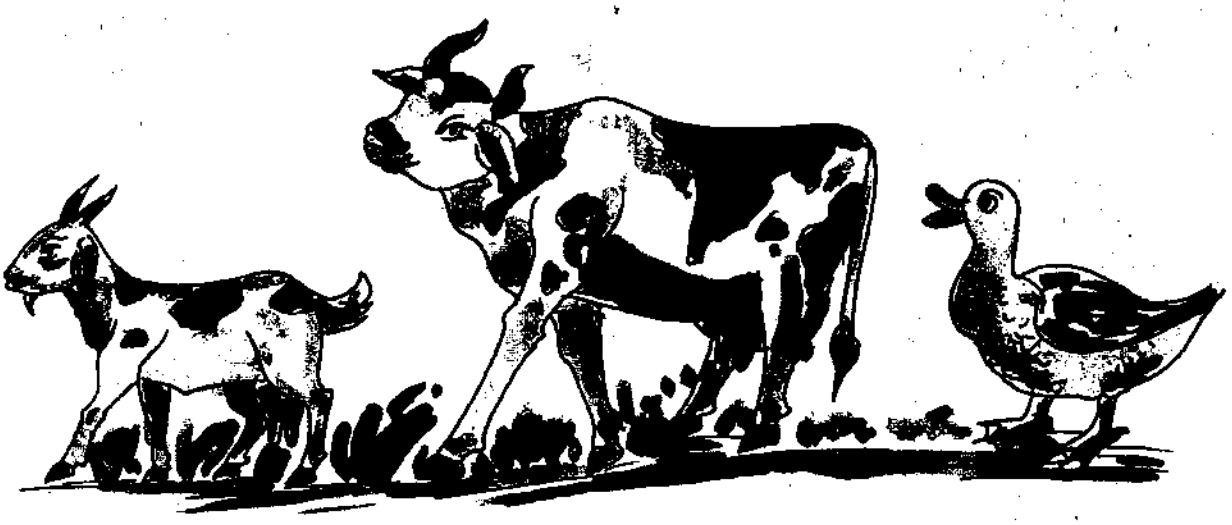

अध्याय-11

# नीक काज

एक व्यक्तिकेँ तीनटा पुत्र छलैक। ओ जखन वृद्ध भय गेल तँ एक दिन अपन तीनू बेटाकेँ अपना लग बजौलक आ कहलक कि हमरा संगमे एक अत्यन्त सुन्दर, वेश कीमती औंठी अछि। ओहि औंठीकेँ हम अहाँ तीनू गोटेमे एककेँ देबय चाहैत छी। किन्तु, जे आइसँ सात दिनक भीतर कोनो एकटा नीक कार्यकय आओत, वैह एहि औंठीक अधिकारी होयत।

एतबा सूनि तीनू बालक ओहि औंठीक लालसासँ नीक कार्य करबाक हेतु घरसँ बहरायल। सात दिनक बाद सभ घर घूरल। तीनू भाइ अपना पिताक समीप गेल। पिता ज्येष्ठ बालकसँ पूछलनि :–

**पिता** :– (ज्येष्ठ बालकसँ) अहाँ कोन-नीक कार्य पूरा कय अयलहुँ अछि ?

**ज्येष्ठ पुत्र** :– पूज्य पिताजी ! जखन हम घरसँ बहरयलहुँ तँ हमरा सामनेसँ एहन एक व्यक्ति हमरा दिस आबि रहल छल, जकर एक सय रुपया हमरा ओहिठाम बाँकी छलैक। बस, जेँ हमरा लग अबैत, बिनु मँगनहि हम ओकरा एक सय रुपैया गनिक द देलिऐक।

**पिता** :– ई कार्य अहाँक नीक नहि कहल जा सकैछ। अहाँक तँ ई धर्म छल। ओकरा लेल ई कोनो भलाइबला कार्य

नहि भेल। (ई कहि पिता मध्यम पुत्रक दिस साकांक्ष भेलाह)।

**मध्यम पुत्रः** :– दयालु पिताजी! हम जखन घरसँ बाहर भेलहुँ तँ जाइत-जाइत जंगलमे पहुँचलहुँ। एकटा पोखरि छल। ओम्हर तकैत छी, तँ देखल जे एक व्यक्ति गहीर जलमे उबडुब कय रहल अछि। हमरा कनेको बिलम्ब होइत तँ ओ व्यक्ति तत्काल डुबि कय मरि जाइत। पिताजी, हम दौड़ैत गेलहुँ आ अपन वस्त्र बिनु उतारनहि पानिमे कूदि कय जेना-तेना ओहि व्यक्तिकेँ बाहर निकालि अनलहुँ।

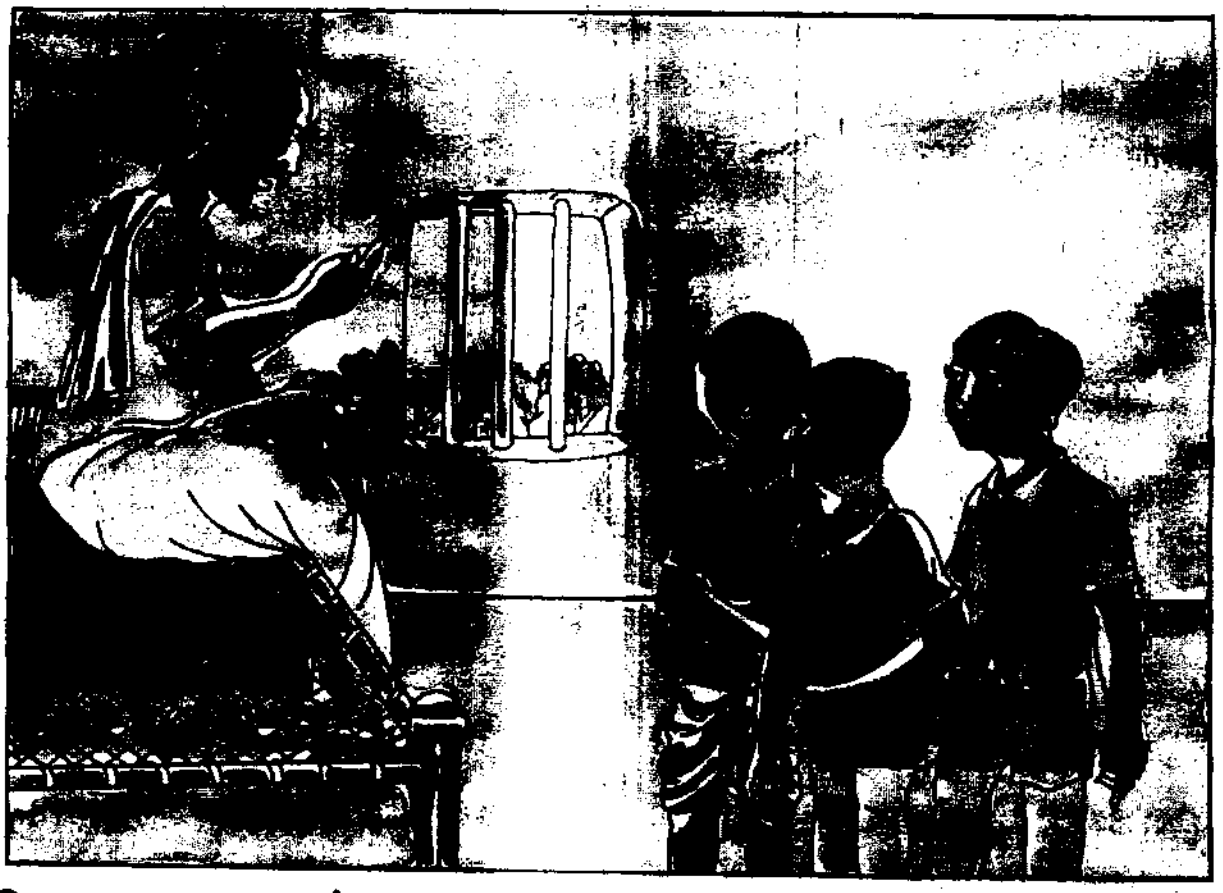

**पिता** :– अहूँक ई धर्म छल। अहाँ ई मानवोचित कार्य कयल अछि। यदि अहाँ से नहि करितहुँ, तँ पापी होइतहुँ। (ई कहि पिता अपन कनिष्ठ पुत्र दिस साकांक्ष भेलाह)।

**कनिष्ठ पुत्रः–** हे धर्मात्मा ! हम घरसँ चलैत–चलैत एक पहाड़ी पर पहुँचलहुँ। ओतय घुमैत देखैत छी जे हमर एक शत्रु एक ढालू चट्टानपर निःशंक भय सुतल अछि। ओ अत्यन्त गाढ़ निद्रामे छल। यदि हम चाहितहुँ तँ कनेक इशारा मात्रसँ ओकरा चट्टानसँ नीचा खसा दितहुँ। नीचामे तेहन गहीर खाधि छलैक जे ओहिमे खसला पर ओकर एकटा हड्डियोक पता नहि रहितैक। यदि हम ओकरा नहियो खसबितिऐक, तथापि कनेको करोट लैत तँ ओ गहीर खाधिमे अवश्ये खसि पड़ैत। पिताजी ! हम ओकरा जगाय सावधान कय देलहुँ। एहि तरहेँ हम ओकरा मृत्युसँ बचा देलहुँ।

(ई सुनितहि वृद्ध पिता अत्यन्त प्रसन्न होइत अपन औंठी निकालि कय ओहि पुत्रकेँ दैत बजलाह)।

**पिता :–** बेटा ! यथार्थ अहाँक ई नीक कार्य भेल, जे शत्रु पर दया देखौलहुँ। अहाँ ओकरा मारियो दय सकैत छलहुँ अथवा मरय दितहुँ; तथापि अहाँ अपराधी नहि होइतहुँ। कारण, जे ओ अहाँक शत्रु छल। परन्तु अहाँ से नहि कयल। अतः धन्य छी पुत्र ! आउ अहाँक मुँह चूमी। अपन शत्रुओसँ प्रेम करी ..... ई वैदिक शिक्षा थिक।

(पटाक्षेप)

## प्रश्न ओ अभ्यास

(क) निम्न प्रश्नक उत्तर दिअ

1. वृद्ध-व्यक्ति अपन तीनू पुत्रकेँ की करबाक हेतु कहलथिन ?
2. वृद्ध-व्यक्ति अपन तीनू पुत्रकेँ देबाक हेतु की गछलथिन ?
3. वृद्ध-व्यक्तिक पहिल पुत्र कोन काज कयलथिन ?
4. वृद्ध-व्यक्तिक दोसर पुत्र कोन काज कयलनि ?
5. वृद्ध-व्यक्तिक तेसर पुत्र कोन काज पूरा कय अयलथिन ?

(ख) सही कथन पर (√) एवं गलत कथन पर (×) निशान लगाउ।

1. आइसँ आठ दिनक भीतर जे नीक कार्य कय आयत, वैह एहि औंठीक अधिकारी होयत। ☐
2. बिनु मँगनहि हम ओकरासँ एक सय रुपैया छीनी लेलियैक। ☐
3. हम पानिमे कूदि कय जेना तेना ओहि व्यक्तिकेँ बाहर निकालि अनलहुँ। ☐
4. हम ओकरा जगाय सावधान कय देलहुँ। ☐
5. अपन शत्रुओसँ प्रेम करी ..... । ☐

(ग) भाषा-अध्ययन :

1. शब्दार्थ

वृद्ध-बूढ़,
अत्यन्त-बहुत,
ज्येष्ठ-वयसमे पैघ,
मध्यम-बीचला,
कनिष्ठ-वयसमे छोट,
निःशंक-बिना कोनो शंकाकेँ

(घ) योग्यता विस्तार :

1. पुस्तकमे देल गेल कथाक अतिरिक्त जँ अहाँकेँ आनो कोनो कथा बूझल अछि तँ ओकरा वर्गमे सुनाउ।
2. अहाँ अपन परिवारमे बूढ़ लोकसँ, जेना बाबा, बाबी, नाना, नानी आदिसँ खिस्सा सूनि ओकरा लिखू आ अपन शिक्षककेँ देखाउ।

# 𑒮𑓂𑒫𑒩-𑒫𑒩𑓂𑒝 (स्वर वर्ण)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 𑒁 | 𑒂 | 𑒃 | 𑒄 | 𑒅 | 𑒆 |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ |
| 𑒇 | 𑒈 | 𑒉 | 𑒊 | 𑒋 | 𑒌 |
| ऋ | ॠ | ऌ | ॡ | ए | ऐ |
| | 𑒍 | 𑒎 | 𑒁𑓀 | 𑒁𑓁 | |
| | ओ | औ | अं | अः | |

कोना लिखी ?

तीर (→) क दिशा-क्रम देखि अक्षर लिखबाक अभ्यास करू–

𑒁 𑒂 𑒁𑓀 𑒁𑓁 –

𑒃 𑒄 𑒅 𑒆 –

𑒇 𑒈 –

𑒉 𑒊 –

𑒋 𑒌 –

𑒍 𑒎 –

प्रत्येक वर्णकेँ पाँच बेर लिखू

𑒁

𑒂

𑒃

𑒄

𑒅

𑒆

𑒇

𑒋

𑒌

𑒍

## 𑒥𑓂𑒨𑒘𑓂𑒖𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒝 (व्यञ्जन वर्ण)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 𑒏 | 𑒐 | 𑒑 | 𑒒 | 𑒓 |
| क | ख | ग | घ | ङ |
| 𑒔 | 𑒕 | 𑒖 | 𑒗 | 𑒘 |
| च | छ | ज | झ | ञ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ট | ঠ | ড | ঢ | ণ |
| **ट** | **ठ** | **ड** | **ढ** | **ण** |
| ত | থ | দ | ধ | ন |
| **त** | **थ** | **द** | **ध** | **न** |
| প | ফ | ব | ভ | ম |
| **प** | **फ** | **ब** | **भ** | **म** |
| য | র | ল | ব | শ |
| **य** | **र** | **ल** | **व** | **श** |
| ষ | স | হ | | |
| **ष** | **स** | **ह** | | |
| | ক্ষ | ত্র | জ্ঞ | |
| | **क्ष** | **त्र** | **ज्ञ** | |

# संख्या

**मिथिलाक्षरमे संख्या एना लिखल जाइछ :**



| मिथिलाक्षर रूप | देवनागरी रूप | प्रचलित रूप |
| --- | --- | --- |
| | १ | 1 |
| | २ | 2 |
| | ३ | 3 |
| | ४ | 4 |
| | ५ | 5 |
| | ६ | 6 |
| | ७ | 7 |
| | ८ | 8 |
| | ९ | 9 |
| | १० | 10 |